प्रस्तावना

भारत की सबसे अधिक जनता गावों में निवास करती हैं। इसीलिए गांधीजी ने कहा था कि भारत को सही अर्थ में अगर समझना है, तो हमें ग्राम की ओर चलना होगा। अविभाजित भारत में लगभग 700,000 गाँव थे। विभाजन के बाद यह संख्या कम हो गयी है, किंतु जनसंख्या में ग्रामीण और नगरी लोगों का अनुपात प्राय:वही है। विभिन्न अनुमानों के अनुसार भारत की जनसंख्या का 70 प्रतिशत गांवों में रहता है। इतना ही नहीं, शहरों के अपरिमित विस्तार से शहर में कई-कई गाँव बस गये हैं। वैसे तो गाँव अपने आप में एक अमूर्त संस्था है, लेकिन गाँव के सामाजिक सरोकार, गाँव का विविध आर्थिक समस्याएँ, गाँव का राजनीतिक-सांस्कृतिक परिदृश्य ही उसे मुर्तित-आकारित करता है। कहानी जीवन के पीछे-पीछे चलती है, उसमें जीवन का यथार्थ रुप अभिव्यक्त होता है, अत: कहानी साहित्य जीवन, समय और समाज को उसकी समग्रता और वास्तविकता में ही पकड़ने का उपक्रम करता है। इस आरंभ को मूर्तिमान करने में अनेक कहानीकारों ने अपना साहित्यिक योगदान दिया है।

भारतीय साहित्य में सर्वप्रथम आधुनिक कहानी को जन्म देने का श्रेय ओड़िया कथाकार फकीरमोहन सेनापति(1843-1911) की है, जिन्होंने 1868 से 1870 के बीच 'लछमनिया' नाम की एक कहानी लिखी थी। उस कहानी के बारे में वे स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखते है "उस 'बीधदायिनी' पत्रिका में मैंने एक कहानी लिखी थी, उसका नाम है 'लछमनिया'। सम्भवत: उत्कल की वह प्रथम प्रकाशित कहानी है." अत: हो सकता है,लेखक की और भी प्रकाशित कहानियाँ रही हो,जो संभव है कि लछमनिया की तरह ही काल-कवलित हो गई हो। लछमनिया न केवल उत्कल की प्रथम कहानी है, बल्कि प्रथम भारतीय कहानी होने का श्रेय उसी का है, इसमें दो मत नहीं है। फिर लेखक के ही अनुसार उस कहानी का ही परिवर्द्धित तथा विकसित रुप फकीरमोहन के प्रसिद्ध उपन्यास 'छ माण आठगुंठ' में देखने को मिलता है। उसके पश्चात दीर्घकाल तक फकीरमोहन ने और कोई कहानी नहीं लिखी। प्रथम दस वर्षों तक उन्हे देशी राज्यों में घूम-घूम कर काम करना पड़ा और फिर अपने बड़े बेटे की मृत्यु के कारण शोक संतप्त माता को सांत्वना देने के लिए उन्होंने 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथों का पद्यानुवाद किया। बाद में 1898 में उन्होंने 'रेवती' नाम की एक कहानी लिखी, जिसको आज ओड़िया साहित्य में प्रथम कहानी कहलाने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने कुल 20-25 कहानियां लिखी थी, जिनमें से अधिकांश कटक और बालेश्वर के (ओड़िया) ग्रामीण जीवन पर आधारित है। उन्होंने उनीसवीं सदी के मध्यम वर्ग का मार्मिक तथा यर्थात चित्र खींचा, तत्कालीन समाज के कुसंस्कार अंधविश्वास,

अशिक्षा, दुख-दुर्दशा, संकीर्णता आदि के चित्र उनकी कहानियों में जीवंत हो उठे हैं। ('रेवती' में अशिक्षा एवं कुसंस्कार के विरुद्ध विद्रोह है तो 'डाकमुन्सी' में पारस्परिक ईमानदारी और नैतिकता का विघटन स्पष्ट् है। तथाकथित अंग्रेजी शिक्षा और सभ्यता के बहाव में आकर अर्धशिक्षित पुत्र का पिता के प्रति अत्याचार तत्कालीन समाज में उभरती रुग्ण मनोवृति का परिचायक है।

ओड़िया कहानी आंदोलन में फकीर मोहन युग के बाद सत्यवादी युग, सबुज युग इसके पश्चात इसी शताब्दी के तीसरे दशक में ओड़िया कहानी के क्षेत्र में साम्यवादी चिंता और चेतना को लेकर भगवती चरण पाणिग्रही, सच्चिदानंद राउतराय, रघुनाथ दास और रामप्रसाद सिंह आदि प्रेवेश करते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले ओड़िया कहानी जगत में नित्यानंद महापात्र जैसे गांधीवादी कथाकार, गोपीनाथ मोहांति जैसे देहाती–दुनिया के कुशल चित्रकार तथा सुरेन्द्र मोहांति जैसे संस्कृति सचेतन कथाकार का आविर्भाव हो चुका था। परंतु स्वातंत्र्योत्तर काल में ही उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास दृष्टिगत होता है। कुल मिलाकर इस युग की कहानियों में मुख्यत: मानवतावाद, गांधीवाद, सामाजिक संस्कारबोध, राष्ट्रीय चेतना, रोमांटिक भावना, मानवीय संवेदना, प्रगतिवादी भावधारा दिखाई देती है और क्रमश: कहानी की धारा मोनबिश्लेषण की ओर मुड़ती हुई नजर आती है।

नवें दशक के प्रारम्भिक में एक ओर युवा कहानीकार वर्ग का उदय होता है। उस वर्ग के हस्ताक्षर है – हृषिकेश पंडा, गौरहरि दास, सदानंद त्रिपाठी, विष्णु साहू, प्रशांत मोहांति, अजय स्वाई, परेस पटनायक, सरोजिनी साहू, जयंती रथ, कविता बरिक, दास बेनहुर, श्रीनिवास पंडा, विराज मोहन दास, तुषारकांति पंडा, स्वर्ण देवी, ज्योती नंद, कैलाश पटनायक, सुस्मिता वागची, सुरेंद्र मिश्र आदि। वस्तुत: यह कहानीकार नई उपनिवेशवादी चेतना के रचनाकार हैं। इनकी कहानियों में वे दयनीय चित्र मिलते हैं, आर्थिक उदारीकरण से ग्रामीण जीवन में जो खतरा उत्पन्न हुआ था, वस्तुत: जो ग्रामीण जीवन भारतीय समाज व्यवस्था में तितर-बितर हो गया। गाँव की शिक्षित पीढ़ी या तो शहर की ओर भागी। पढ़े-लिखे और अनपढ़ युवा वर्ग तथाकथित राजनीतिज्ञों का दलाल बना। सम्भ्रांत और उच्च शिक्षित वर्ग देहात में बसना पसंद नहीं किया। इस दशक के कहानीकारों ने यथार्थवादी ढ़ंग हुए परिवर्तनों का चित्रण किया। अपितु परिवर्तन के इस नई पीढ़ी जीने के लिए काफी कुछ संघर्ष की पीड़ा झेलती है। कहानी में इसका जीता-जागता चित्र मिलता है। कहानी का कैनवास जैसे बहुत बड़ा है वैसे ही समकालीन जीवन का सही प्रतिफलन भी हुआ है।

हिंदी कहानी की वास्तविक विकास-यात्रा सन् 1900 इ.से सरस्वती प्रत्रिका के प्रकाशन के साथ शुरू होती है। इसमें हिंदी के श्रेष्ठ कहानीकारों की कहानियों को प्रकाशित करके हिंदी कहानी के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इसी पत्रिका के माध्यम से किशोरीलाल गोस्वामी, आचार्य शुक्ल, बंगमहिला, वृन्दावनलाल वर्मा, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, कौशिक, प्रेमचन्द आदि कहानीकार प्रकाश में आये। हिंदी कहानी की विकास यात्रा एक ऐसी यात्रा है जिसमें बहुत जल्दी-जल्दी मोड़ आते गये और हिंदी कहानी परिवर्तनों के बीच से गुजरती हुई आज ऐसे बिंदु पर पहूँच गयी है जहाँ से उसके विकास की अनेक रूप-रेखाएँ स्पष्ट होती दिखाई पड़ती हैं।

नवें दशक के कहानीकारों ने ग्रामीण नगरीय एक महानगरीय जीवन की परिवर्तित सामाजिक स्थितियों, दशाओं तथा संबधों का प्रामाणिक चित्रण किया है। स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण जीवन में बड़ी तेजी से परिवर्तन दिखायी दिये हैं। फलत: परंपरागत ग्रामीण व्यवस्था नये रुप में सामने आती है। आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक धरातल पर ग्रामीण परिवेश नया रुप ग्रहण करता दिखायी दिया। सन् साठ के बाद ग्रामीण जीवन में परिवर्तन की गति तेज हुई है। आठवें नवें दशक में आकर पूरा ढांचा बदला हुआ दिखाई देने लगा जीविका के परंपरागत साधन जब अपर्याप्त पड़नें लगे तो बहुत बड़ी संख्यां में लोग शहरों में विस्थापित हुए। विकास योजनाओं ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक नया रूप दिया। स्थानीय निकायों, विधान सभाओं एवं संसद के चुनावों ने ग्रामीण जीवन के वायुमण्डल में गुटबंदी का जहर घोल दिया। आर्थिक दौड़ में ग्रामीण परिवेश में जो दरार आयी उसे राजनीति ने चौड़ा कर दिया। उन खंदकों में जातिधर्म की जड़े फैलने लगी और मानवीय संबंधों का गंदा पानी उन्हें सींचने लगा। संयुक्तो परिवार का विघटन प्रेमचंद युग की कहानियों में ही झलकने लगा था यहाँ आकर इसका पुरी तरह लोप हो गया। ग्रामीण जीवन में ऊपर से ठीक दिखाई-देने के बावजुद भी संबधो और मानवीयता के स्तर पर खोखले दिखाई देते हैं। इस दशक के महत्वपूर्ण कथाकारों में रमेशचन्द्र शाह, स्व्यंप्रकाश, विवेक राय, संजीव, मिथिलेश्वर, उदय प्रकाश, धीरेंद्र आस्थाना, राजकुमार गौतम, स्वदेश दीपक, अखिलेश शिवमूर्ति, प्रियंवद और सृंजय आदि के नाम उल्लेखनीय है। महिला कथा लेखन में मैत्रयी पुष्पा, गीतांजली श्री, प्रभा खेतान, क्षमा शर्मा, अलका सरावगी एवं ऋता शुक्ला आदि हैं। दलित विमर्श के कथाकार के रूप में ओमप्रकाश वाल्मीकी, श्योराज सिंह बैचेन, मोहन नैमिशराय, कंवल भारती, सूरज पाल, संजय खाती, जयप्रकाश कर्दम आदि ने पहचान बनाई है।

इस लघु-शोध में हिंदी और ओड़िया के ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंधित कुछ चुनिंदा कहानियों को ही शामिल किया जाएगा है।

प्रस्तावित विषय पर उपलब्ध सामग्री तथा शोध की संभावनायें-

मेरे संज्ञान में इस विषय को लेकर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। चूँकि यह शोध कार्य अत्यंत नवीन है। **"हिंदी और ओड़िया की कहानियों में ग्रामीण जीवन संदर्भ नवां दशक "** इस विषय पर अभी कोई ठोस सामग्री हैं। यहा शोध कार्य अपने आप में एक मौलिक शोध कार्य होगा। मेरे संज्ञान में किसी भी विश्वविद्यालय में इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है

शोध प्रविधि:-

इस शोध कार्य के दौरान समाजशास्त्रीय, आलोचनात्मक तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध प्रविधि का सहारा लिया जाएगा ।

हिंदी और ओड़िया कहानियों में ग्रामीण जीवन मूल्य : संदर्भ – (नवाँ दशक)

अनुक्रमणिका

भूमिका

अध्याय-1 : सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्थिति

1.1 नवें दशक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति

1.2 बीसवी सदी के उत्तरार्ध में राजनैतिक स्थिति

अध्याय-2 : हिंदी कहानियों में ग्रामीण जीवन

2.1 किसान जीवन : सर्पदंश

2.2 स्त्री जीवन : तिरिया जनम एवं तिरिया चरित्तर

2.3 अंधविश्वास : महामारी एवं दहलीज पर न्याय

2.4 निम्न वर्ग : कसाईबाड़ा

2.5 पारिवारिक संबंध विघटन : हरिहर काका एवं छप्पन तोले की करघन

2.6 ग्रामीण संस्कृति : नौटंकी

अध्याय-3 : ओड़िया कहानियों में ग्रामीण जीवन मूल्य

3.1 किसान जीवन : साहब देवता

3.2 स्त्री जीवन : पाटदेई

3.3 अंधविश्वास : अपमृत्यु की भूमिका एवं रिष्ट

3.4 निम्न वर्ग : उन्नयन

3.5 पारिवारिक संबंध में विघटन : सहोदर

3.6 ग्रामीण संस्कृति : अभिशप्त गंधर्व

संदर्भ-सूची

ओड़िया पुस्तकों की सूची

- दानी, पूर्णानंद, ओड़िया गल्प प्रसंग, मेंनका प्रकाशन, 1989
- दास, जगन्नाथ प्रसाद, मकड़ी का जाला (हिंदी का संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1999
- दास, विराजमोहन, ओड़िया क्षुद्रगल्प में अनुन्नत संप्रदाय, ओड़िसा बुक स्टोर 1997
- पंडा, हृषिकेश, साहब देवता, फ्रंडस पब्लिशर्स, 1997
- पटनायक, अजय कुमार, ओड़िया साहित्य : विविध प्रसंग, (हिंदी संस्करण) मिडिया साहित्य अकादमी, सबनम पुस्तक महल, 2009
- प्रधान, कृष्णचंद्र, ओड़िया कथा कल्पना की दिशा और सीमाएं, सत्यनारायण बुक स्टोर, कटक, 2010
- बारीक, कविता, कहानियों के सौ साल: एक तात्विक विश्लेषण, विद्यापुरी, कटक, 1999
- बेनहुर, दास्र, समय संपर्क, ओड़िसा बुक स्टोर, 1983
- महापात्र, नीलमणि साई, अभिशप्त गंधर्व, (हिंदी संस्करण) साहित्य अकादमी, 1992
- मांसाशीओं के उद्देश्य में, ओडिसा बुक स्टोर,1982
- माहांती, वीणापाणी, श्रेष्ठ कहानियाँ वीणापाणी माहांती, शबनम पुस्तक महल, 2004
- मिश्र, दीनबंधु, सांप्रतिक ओड़िया क्षुद्रगल्प : श्रृष्टि और श्रेष्टा,आर्या प्रकाशन, 2004

- राय, प्रतिभा, हरित पत्र, यूनिक पब्लिशर्स, 2003

हिंदी आधार-ग्रंथ

- चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, ज्ञान भारती, 1989
- प्रकाश, उदय, तिरिछ, वाणी प्रकाशन, 2009
- मिथिलेश्वर, माटी की महक धरती गाँव की, मयूर पेपर बैक्स, 2002
- मिश्र, रामदरश, दिन के साथ, वाणी प्रकाशन, 2002
- शिवमूर्ति, केसर कस्तूरी, 1991
- संजीव, संजीव की कथायात्रा, पहला पड़ाव, 2010

पत्र-पत्रिकाएं

- अनभै, अंक 6, जुलाई-दिसंबर 2009
- पांडुलिपि विमर्श, अक्टूबर-दिसंबर 2010, रायपुर
- पांडुलिपि विमर्श, अप्रैल-जून 2011, रायपुर
- रु, जनवरी 2011, भकुरा, विहार
- लमही, (शिवमूर्ति विशेषांक) अक्टूबर-दिसंबर, 2012
- हस्तक्षेप, जनवरी-जून, 2011, बीएचयूबनारस

आलोचना ग्रंथ

- तिवारी, रामचंद, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2011

- पवार, ईश्वर, उत्तरशती की उपन्यास में नगरेत्तर जीवन, विकास प्रकाशन, कानपूर 2006
- प्रसाद हरिहर, समकालीन हिंदी कहानी, विद्या साहित्य संस्थान, 1999
- भंडारे, सुकुमार, समकालीन उपन्यासों में राजनितिक जीवन, विकास प्रकाशन, 2007
- मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन 2008
- मुलेरेखा, कथाकार चंद्रकांता, विकास प्रकाशन, 2005
- शर्मा, राजमणि, दलित चेतना की कहानियाँ : बदलती परिभाषाएं, वाणी प्रकाशन, 2008